



આત્મધર્મ

* ૧૦૩મી જન્મજયન્તી-વિશેષાંક *

કહાન સંવત-૧૨ (૫૮૩) * આત્મધર્મ * (અંક-૧૧) વીર સં. ૨૫૧૮
 મે, ૧૯૯૨

卐 आगम महासागरनां आगुमूलां रत्नो 卐

* જેમ રસ્તે ચાલતાં કોઈ ગરીબને (કે રાહુગીરને) જે સોનાથી ભરેલો ઘડો મળી જાય તો તે તેને ગુપ્ત રાખે છે. તેમ હે ભવ્ય ! તું તારી નિજાત્મભાવનાને પોતામાં ગુપ્ત રાખજે—ગુપ્તપણે તેનો અનુભવ કરજે. ૩૧૪.

(શ્રી નેમીશ્વર-વચનામૃતશતક, શ્લોક-૧૭)

* જખતક પરમતત્ત્વકો ન જાને, ન શ્રદ્ધા કરે, ન અનુભવે તખતક કર્મબંધસે નહીં છૂટતા. ઇસસે યહુ નિશ્ચય હુઆ કિ કર્મબંધસે છૂટનેકા કારણ એક આત્મજ્ઞાન હી હૈ, ઓર શાસ્ત્રકા જ્ઞાન સી આત્મજ્ઞાનકે લિયે હી ક્રિયા જતા હૈ જૈસે દીપકસે વસ્તુકો દેખકર વસ્તુકો ઉઠા લેતે હૈ ઓર દીપકકો છોડ દેતે હૈ; ઉસી તરહ શુદ્ધાત્મતત્ત્વકે ઉપદેશ કરને-વાલે જે અધ્યાત્મશાસ્ત્ર ઉનસે શુદ્ધાત્મતત્ત્વકો જાનકર ઉસ શુદ્ધાત્મતત્ત્વકા અનુભવ કરના ચાહિયે ઓર શાસ્ત્રકા વિકલ્પ છોડના ચાહિયે. શાસ્ત્ર તો દીપકકે સમાન હૈ, તથા આત્મવસ્તુ રત્નકે સમાન હૈ. ૩૧૫.

(શ્રી યોગીન્દ્રદેવ, પરમાત્મપ્રકાશ, અધિ.-૨, ગાથા-૮૨)

* જેવી રીતે આંખ રૂપને ગ્રહણ કરતી થકી રૂપમય થઈ જતી નથી, તેમ જ્ઞાન જોયને જાણતું થકું જોયરૂપ થઈ જતું નથી. ૩૧૬.

(શ્રી અમિતગતિ આચાર્ય, યોગસાર પ્રાભુત, અધિ.-૧, ગાથા-૨૨)

* જુઓ પરિણામોની વિચિત્રતા ! કે-કોઈ જીવ તો અગિયારમાં ગુણસ્થાને યથાખ્યાતચારિત્ર પામી પાછો મિથ્યાદષ્ટિ ખની કિંચિત્ન્યૂન અર્ધપુદ્ગલપરાવર્તન કાળ સુધી સંસારમાં રખડે છે ત્યારે કોઈ જીવ નિત્યનિગોદમાંથી નીકળી મનુષ્ય થઈ આઠ વર્ષની આયુમાં મિથ્યાત્વથી છૂટી અંતર્મુહૂર્તમાં કેવળજ્ઞાન પ્રાપ્ત કરે છે—એમ જાણી પોતાના પરિણામ ખગડવાનો ભય રાખવો તથા તેને સુધારવાનો ઉપાય કરવો. ૩૧૭.

(શ્રી ટોડરમલ્લજી, મોક્ષમાર્ગપ્રકાશક, અધિકાર-૭, પાત્ર-૨૬૬)

* હે જોગી ! જેના હૈયામાં જન્મ-મરણ વગરના એક દેવ નથી વસતા તે જીવ પરલોકને (મોક્ષને) કઈ રીતે પામશે ? ૩૧૮.

(મુનિવર રામસિંહ, પાહુડ-દોહા, ગાથા-૧૬૪)

કલ્હાન
સંવત-૧૨
વર્ષ-૪૮
અંક-૧૨
[૫૮૪]



વીર
સંવત
૨૫૧૮
સં. ૨૦૪૮
MAY
A.D. 1992

અનંત-ઉપકારમૂર્તિ પરમ પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રીની ૧૦૩મી જન્મજયંતીના ઉપલક્ષમાં શ્રી માધનંદિ આચાર્યકૃત શાસ્ત્રસાર-સમુચ્ચય ગ્રંથમાંથી વીણેલાં

卐 ૧૦૩ આત્મમૂલાં રત્નો 卐

[અનંત-ઉપકારમૂર્તિ સ્વાનુભૂતિ-માર્ગ પ્રકાશક તારણહાર પરમપૂજ્ય ગુરુદેવશ્રીએ જીવનપર્યંત પ્રવચનોમાં, રાત્રિચર્ચાઓમાં ને હરતાં-ફરતાં કે અન્ય વિવિધ પ્રસંગે હંમેશા ધ્રુવ-પરમાત્મ-સ્વભાવના જ ગાણા ગાયા હતા. તેઓશ્રીના ઘોલનમાં ધ્રુવ...ધ્રુવ...ધ્રુવની જ ધૂન રહેતી હતી. તેઓશ્રી ફરમાવતા હતા કે જેને ધ્રુવ-પરમાત્માનો ભેટો કરવો હોય તેના વાંચનમાં, વિચારમાં, વાણીમાં ધ્રુવની જ વાર્તા હોવી જોઈએ. તેઓશ્રીને જીવનપર્યંત ધ્રુવ-પરમાત્માની એટલી મસ્તી રહી કે તેઓશ્રી જે કોઈ પરમાગમ, આગમ કે ભક્તિ-અધિકાર વાંચતાં કે જે કોઈ શાસ્ત્રો ઉપર પ્રવચવનો આપતાં તેમાં એકલો કારણ પરમાત્મા જ ઘૂંટતાં ને ઘૂંટાવતાં.

તેઓશ્રી જાણતાં હતાં કે આ ભોળા ભવ્ય જીવો અનાદિથી ક્ષણિક) પર્યાય-વ્યવહારમાં જ રૂબેલાં છે અને પ્રગટ કરવાયોગ્ય શુદ્ધતાના ભોભે પણ દષ્ટિમાં પર્યાયને વજન આપશે. તેથી ત્યાંથી-પર્યાયદષ્ટિથી પાછા વાળીને ધ્રુવ-પરમાત્માની દષ્ટિ કરાવવા તેઓશ્રીએ ૪૫-૪૫ વર્ષ સુધી સ્વાનુભૂતિ-માર્ગ પ્રકાશક નિશ્ચયપ્રધાન સદુપદેશ દ્વારા આપણને સમજાવ્યું હતું કે "ભાઈ! હું તો પૂરણ પરમાત્મા થવાને લાયક છું-એમ નહિ પણ પૂરણ પરમાત્મા અત્યારે હું છું-એમ મનન કર!" તેઓશ્રીના આ અધ્યાત્મ-રહસ્યગંભીર સદુપદેશને અનુરૂપ, શ્રીમદ્ માધનંદિ આચાર્યકૃત શાસ્ત્રસાર-સમુચ્ચય ગ્રંથમાંથી અત્રે ૧૦૩ વચનામૃત પ્રસ્તુત કર્યાં છે.

पूज्य गुरुदेवश्री लंभेशा इरमावतां के तुं कृतकृत्य छे; तुं परमात्मा छे, अनंती सिद्ध पर्यायिनी तुं आणु छे, केवणज्ञानस्वरूप छे... छत्यादि छत्यादि कहीने, जे प्रगट करवा लायक छे जेवी अचिंत्य पूर्ण पवित्र शुद्ध इशानुं पणु लक्ष गौणुं करावीने कृतकृत्य ध्रुव-परमात्मानि दृष्ट करवानुं कहेतां; ते ज वातने आही आचार्यदेवे जगत समक्ष जाहेर करी छे, जे वांछीने, गुरु प्रद्वीत अध्यात्म-स्वरूपना निःसंदेह ज्वालन-चिंतन धउ अनंत-उपकारभूति पूज्य गुरुदेवश्रीनी स्वानुभवप्रेरक १०३मी मंगल जन्मजयंती उजवानी सार्थकता करीअे जे ज मंगल लावना.]

—संपादक

कृतकृत्योऽहम्.

अर्थ—जिस प्रकार सिद्ध भगवान मोक्ष पदार्थ को सिद्ध कर कृतकृत्य हो गये है अर्थात् जे कुछ करना था वह सब कुछ कर लिया है. उसी प्रकार मेरी यह शुद्ध आत्मा भी कृतकृत्य स्वरूप है. १.

पंचमहाकल्याणांकितोऽहम्.

अर्थ—श्री तीर्थंकर परमदेव के गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान और मोक्ष—ये पांच महा कल्याण होते हैं. यह उनके अत्यंत शुद्ध आत्मा के महा पुण्य का प्रभाव है. इसी प्रकार मेरी यह शुद्ध आत्मा भी परम पुण्यवान और पांच महा कल्याणों से सुशोभित है. २.

विशिष्टानन्तचतुष्टय समवसरणादि विभूति रूपान्तरंग- बहिरंगश्रीसमेतोऽहम्.

अर्थ—जिस प्रकार भगवान अरहंतदेव अनन्त चतुष्टय रूप अंतरंग विभूति और समवसरणादि रूप बहिरंग विभूति से सुशोभित हैं. उसी प्रकार मेरी यह शुद्ध आत्मा भी अनन्त चतुष्टय रूप अंतरंग विभूति और समवसरणादि रूप बहिरंग विभूति से सुशोभित है. ३.

क्षायिकसम्यक्त्व स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—मैं क्षायिक सम्यग्दर्शनमय हूँ. ४.

सिद्ध स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—जिस प्रकार सिद्ध भगवान् समस्त कर्मों को नष्ट कर सिद्ध अवस्था को प्राप्त कर चुके है. उसी प्रकार मेरी यह शुद्ध आत्मा भी समस्त कर्मों से रहित सिद्धस्वरूप ही है. ५.

स्वात्मोपलब्धि स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—जिस प्रकार सिद्ध भगवान् को अपनी शुद्ध आत्मा की प्राप्ति हो गई है. और उस शुद्ध आत्मा की प्राप्ति से जैसा उनका स्वरूप है वैसा ही स्वरूप वाला मैं हूँ. ६.

निजशुद्धात्मस्मरण निश्चयसिद्धोऽहम्.

अर्थ—जिस प्रकार सिद्ध भगवान् अपनी शुद्ध आत्मा के स्मरण के विषयभूत निश्चय सिद्ध स्वरूप है. उसी प्रकार मेरी यह शुद्ध आत्मा भी अपनी ही शुद्ध आत्मा के स्मरण के विषयभूत निश्चय सिद्ध है. ७.

शुद्धात्मसंविति स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—भगवान् सिद्ध-परमेष्ठी जिस प्रकार अपनी शुद्ध आत्मा से उत्पन्न होने वाले केवलज्ञानमय है. उसी प्रकार मैं भी शुद्ध केवलज्ञानमय हूँ. ८.

निजनिरंजन स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—मेरी यह आत्मा सिद्धों के समान भावकर्म, द्रव्यकर्म, नोकर्म से रहित है. इसलिये मैं समस्त रागादिक भावों से रहित हूँ. ९.

परम केवलज्ञानोत्पत्ति कारण स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—इस संसार में परमात्कृष्ट केवलज्ञान की उत्पत्ति का कारण राग-द्वेष-मोह का सर्वथा अभाव ही कारण है. और मेरी यह आत्मा भी राग-द्वेष-मोह से सर्वथा रहित है. इसलिये मैं भी केवलज्ञान की उत्पत्ति का कारण स्वरूप हूँ. १०.

परम शरणोऽहम्.

अर्थ—इस संसार में ज्यों के लिये परम शरण उप अरुहंत, सिद्ध, साधु और जिन धर्म—ये चार ही पदार्थ हैं. इन चारों ही परम शरण उप मेरी आत्मा है. ११.

सहज शुद्धपारिणामिक भावस्वरूपोऽहम्.

अर्थ—मैं शुद्ध पारिणामिक भाव हूँ. शुद्ध आत्मा का जवत्त्व भाव स्वाभाविक पारिणामिक भाव है. तत्स्वरूप ही मेरी आत्मा है. १२.

सहज शुद्ध ज्ञानानन्दैक स्वभावोऽहम्.

अर्थ—मैं स्वाभाविक शुद्ध ज्ञान अर्थात् केवलज्ञान से उत्पन्न होने वाले परमानन्द स्वरूप हूँ. १३.

परम मंगल स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—इस संसार में परम मंगल स्वरूप अरुहंत, सिद्ध, साधु और जिन धर्म ये चार ही पदार्थ हैं. इन चारों ही मंगलस्वरूप या मंगलमय मेरी आत्मा है. १४.

परमोत्तम स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—इस संसार में परमोत्तम स्वरूप अरुहंत, सिद्ध, साधु और जिन धर्म—ये चार ही पदार्थ हैं. इन चारों ही परमोत्तमस्वरूप मेरी आत्मा हैं. १५.

परमकारुण्यरसापेत सर्वभाषात्मक दिव्यध्वनि—स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—जिस प्रकार अरुहंत भगवान परम करुणाऽपी रससे भरपूर और समस्त भाषाऽप दिव्यध्वनि स्वरूप हैं. उसी प्रकार मेरी भी यह शुद्ध आत्मा परम करुणाऽपी रससे भरपूर और समस्त भाषा-ऽप दिव्यध्वनि स्वरूप है. १६.

ज्ञानज्योति स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—समस्त पदार्थों को प्रकाशित करनेवाला केवलज्ञान परमोत्कृष्ट प्रकाश रूप है, उस प्रकाश रूप में हूँ. १७.

कोट्यादित्यप्रभासंकाश परमौदारिक दिव्यशरीरोऽहम्.

अर्थ—जिस प्रकार भगवान् अरुहंतदेवका शरीर करोड़ों सूर्योंकी प्रभाके समान दृष्टीप्यमान परमौदारिक दिव्य शरीर है. उसी प्रकार मेरी शुद्ध आत्माका भी यह शरीर करोड़ों सूर्योंकी प्रभाके समान अत्यन्त दृष्टीप्यमान परमौदारिक दिव्य शरीर है. १८.

निष्क्रिय टंकोत्कीर्ण ज्ञायकैक स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—जिस प्रकार सिद्ध-परमेष्ठी समस्त क्रियाओंसे रहित टंकोत्कीर्ण अर्थात् टांकीसे उकड़े लुगने पुड़ाकारके समान समस्त पदार्थोंको जलनेवाले ज्ञायक स्वरूप है. उसी प्रकार मेरी यह शुद्ध आत्मा भी समस्त क्रियाओंसे रहित टंकोत्कीर्णके समान समस्त पदार्थोंको जलनेवाला ज्ञायक स्वरूप है. १९.

अतिशय स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—जिस प्रकार अरुहंत वा सिद्ध भगवात अनंत अतिशयों से सुशोभित है. उसी प्रकार यह मेरी शुद्ध आत्मा भी अनंत अतिशयों से सुशोभित है. २०.

शुद्धाखण्डैकमूर्त स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—यह परम शुद्ध आत्मा परम शुद्ध है. अण्ड एक मूर्त स्वरूप है. उसी प्रकार परम शुद्ध अण्ड एक मूर्त स्वरूप में हूँ. २१.

परमात्म स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—जिस प्रकार सिद्ध भगवान् समस्त कर्मों के नष्ट करके परमात्मा बन गये है. उसी प्रकार मेरी आत्मा भी परमात्मस्वरूप ही है. २२.

निरुपम निर्लेप स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—यह परम शुद्ध आत्मा उपमा रहित और समस्त रागादिक
दोषोंसे रहित है. जैसे ही शुद्ध आत्मस्वरूप में हूँ. २३.

चतुस्त्रिंशदतिशयसमोतोऽहम्.

अर्थ—भगवान् अरहंत के समान मेरी यह शुद्ध आत्मा भी
चौतीस अतिशयों से सुशोभित है. २४.

शतेन्द्रवृन्दनंघपादारविन्दवृन्दोऽहम्.

अर्थ—जिस प्रकार भगवान् अरहंतदेव या सिद्ध-परमेष्ठी के
चरण कमल सैकड़ों छन्दों के द्वारा वंदनीय हैं. उसी प्रकार मेरी
इस शुद्ध आत्मा के दोनों चरण कमल भी सैकड़ों छन्दों के द्वारा
वंदनीय है. २५.

किञ्चिन्न्यूनान्त्य चरमशरीर प्रमाणोऽहम्.

अर्थ—जिस प्रकार सिद्धोंकी आत्माका आकार अंतिम चरम
शरीरसे कुछ कम होता है. उसी प्रकार मेरी इस शुद्ध आत्माका आकार
भी चरम शरीरसे कुछ कम आकारवाला है. २६.

परमपवित्रोऽहम्.

अर्थ—जिस प्रकार भगवान् अरहंतदेव या सिद्ध भगवान् परम
पवित्र हैं. उसी प्रकार मैं भी परम पवित्र हूँ. २७.

सहजानन्द स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—परम शुद्ध आत्माके समान मेरी भी यह आत्मा स्वाभाविक-
रूपसे होनेवाले केवल आत्मासे उत्पन्न होनेवाले आनंद या परमानंद
स्वरूप है. २८.

सहजसुखानन्द स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—मेरी यह आत्मा सिद्धोंके समान केवल आत्मासे स्वाभाविक-
रूपसे उत्पन्न होनेवाले परम सुख या परम आनंदमय है. २९.

अष्टमहाप्रातिहार्यविशिष्टोऽहम्.

अर्थ—जिस प्रकार अरुंडंत भगवान् यमर, छत्र आदि आठ
प्रातिहार्यों से सुशोभित होते हैं. उसी प्रकार मेरी यह शुद्ध आत्मा भी
आठ प्रातिहार्यों से सुशोभित है. ३०.

भेदाचल निर्भरानन्द स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—मैं समस्त आनंदोंसे भिन्न तथा निश्चितरूपसे रहनेवाले
परमानंद स्वरूप हूँ. ३१.

अध्यात्मसार स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—इस आत्मामें सारभूत पदार्थ रत्नमय है. इसी पूर्ण
रत्नत्रयस्वरूप मेरी आत्मा है. ३२.

परम स्वास्थ्य स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—इस संसारमें जन्म, मरण और जरा या जुड़ापा—ये तीन
ही रोग हैं. अरुंडंत और सिद्ध भगवान् इन तीनों रोगोंसे रहित हैं.
इसलिये वे परम निरोग वा परम स्वस्थ हैं. मेरी आत्मा भी इन
तीनों रोगोंसे रहित सर्वाथा स्वस्थ है. इसलिये मैं भी परम स्वास्थ्य
स्वरूप हूँ. ३३.

भूतार्थ स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—जिस प्रकार सिद्धोंकी आत्माका स्वरूप आत्माका यथार्थ
स्वरूप है. उसी प्रकार मेरी आत्माका स्वरूप यथार्थ स्वरूप अनंत
अतुष्टयमय है. ३४.

परम स्वसंवेदन स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—अपनी शुद्ध आत्माका अनुभव करना स्वसंवेदन है. ऐसा परम स्वसंवेदन सिद्ध-परमेष्ठीके होता है. इसलिये अरुहंत व सिद्ध परमेष्ठी परम स्वसंवेदनस्वरूप है. ऐसा ही स्वसंवेदन करनेवाला मैं हूँ. इसलिये मैं भी परमस्वसंवेदन स्वरूप हूँ. ३५.

परम भेदज्ञान स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—यह शुद्ध आत्मा शरीरसे सर्वथा भिन्न है. सिद्ध-परमेष्ठीके किसी प्रकारका शरीर नहीं. इसलिये वे ही परम भेदज्ञान स्वरूप है. मेरी यह आत्मा भी वैसा ही है, इसलिये मैं भी परम भेदज्ञान स्वरूप हूँ. ३६.

अष्टविध कर्मरहितोऽहम्.

अर्थ—मेरी यह परम शुद्ध आत्मा सिद्धों के समान ज्ञानावरणादि आठों कर्मों से सर्वथा रहित है. ३७.

लोकाग्रवासी स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—जिस प्रकार सिद्ध भगवान् समस्त कर्मों को नष्ट कर लोकाकाश के अग्र भाग पर विराजमान है. उसी प्रकार मेरी यह शुद्ध आत्मा भी उन्ही के समान लोकाग्र निवासी है. ३८.

चित्कला स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—आत्मा में रहने वाली चैतन्यस्वरूप ज्ञे कला है. जिसको शुद्ध चैतन्य कला कहते हैं. इस कला स्वरूप ही मैं हूँ. ३९.

अष्टगुण सहितोऽहम्.

अर्थ—भगवान् सिद्ध-परमेष्ठी जिस प्रकार अनंतसम्बद्धत्व, अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, अनंतसुख, अव्याप्य, सूक्ष्म, अवगाहन, अनंत वीर्य—इन आठ गुणों से सुशोभित है. उसी प्रकार मेरी यह शुद्ध आत्मा भी उन्हीं आठ गुणों से सुशोभित है. ४०.

शाश्वतोऽहम्.

अर्थ—जिस प्रकार सिद्ध-परमेष्ठी सदा काल विद्यमान रहते हैं उसी प्रकार मेरी यह शुद्ध आत्मा भी सदा काल विद्यमान रहनेवाली है. ४१.

चैतन्यचिह्न स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—शुद्ध चैतन्य स्वरूप आत्माके जे अनन्त चतुष्टय (अनन्त ज्ञानादिक) चिह्न हैं, तत्स्वरूप ही मैं हूँ. ४२.

समयसार स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—परम शुद्ध आत्मा को समय कहते हैं. इस शुद्ध आत्मा के सारे अनन्त चतुष्टय गुण हैं. उन अनन्त चतुष्टय गुणों से भरपूर जैसी सिद्धों की आत्मा है, वैसी ही मेरी आत्मा है. ४३.

स्वात्मानुभूति स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—भगवान सिद्ध-परमेष्ठी को जिस प्रकार अपनी शुद्ध आत्मा का अनुभव होता है वैसा ही अपनी शुद्ध आत्माका अनुभव करने वाला मैं हूँ. ४४.

शुद्ध चित्काय स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—जिस प्रकार सिद्ध-परमेष्ठी के एक परम शुद्ध चैतना ही शरीर है अन्य पौद्गलिक शरीर नहीं हैं उसी प्रकार मेरी यह शुद्ध आत्मा भी पुद्गल शरीर रहित अत्यन्त शुद्ध चैतन्यमय शरीरको धारण करता है. ४५.

स्वयंभूरऽहम्.

अर्थ—जिस प्रकार अरहंत भगवान स्वयंभू है. अपने आप कर्मों को नष्ट कर स्वयंभू हुये हैं उसी प्रकार मेरी यह आत्मा भी समस्त कर्मोंसे रहित होनेके कारण स्वयंभू है. ४६.

विशदाखंडैकप्रत्यक्षप्रतिभासमय सकलविमल केवलदर्शन स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—जिस प्रकार अरुंडत भगवान् अत्यंत निर्मल तथा अण्ड-
रूप समस्त पदार्थोंको प्रत्यक्ष प्रतिभासित करनेवाला पूर्ण निर्मल केवल-
दर्शन स्वरूप है. उसी प्रकार मेरी भी यह शुद्ध आत्मा पूर्ण निर्मल
केवलदर्शनमय है. ४७.

अतिशयातिशयमूर्तानन्तसुखस्वरूपोऽहम्.

अर्थ—जिस प्रकार अरुंडत भगवान् अनंत अतिशयोक्ती मूर्तिरूप
अनंत सुख स्वरूप है उसी प्रकार मेरी यह शुद्ध आत्मा भी अनंत
अतिशयोक्ती मूर्तिस्वरूप अनंत सुख स्वरूप है. ४८.

अतीन्द्रियातिशयामूर्तीकस्वरूपोऽहम्.

अर्थ—जिस प्रकार भगवान् अरुंडतदेव अतीन्द्रिय अनेक
अतिशयोक्ती सुशोभित होते हुए अमूर्त स्वरूप है उसी प्रकार मेरी
शुद्ध आत्मा अनेक अतीन्द्रिय अतिशयोक्ती सुशोभित होता हुआ अमूर्त-
स्वरूप है. ४९.

अचिन्त्यानन्तगुणस्वरूपोऽहम्.

अर्थ—जिस प्रकार अरुंडत भगवान् अचिंत (जे चिंतनमें
भी नहीं आ सके जैसे) अनंतगुण स्वरूप है उसी प्रकार मेरी भी
शुद्ध आत्मा अचिंत्य अनंतगुण स्वरूप है. ५०.

अविचलित शुद्ध चिदानन्द स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—जिस प्रकार सिद्धोंका स्वरूप जे कभी भी विचलित न हो
सके, बलायमान न हो सके—जैसे शुद्ध चिदानंद स्वरूप है उसी प्रकार
मेरी यह शुद्ध आत्मा भी कभी भी बलायमान न हो सके—जैसे शुद्ध
चिदानंद स्वरूप है. ५१.

निर्गति स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—सिद्धों के समान मेरी यह शुद्ध आत्मा भी चारों प्रकार की गतियों से सर्वथा रहित है. पर.

जगत्त्रयपूज्योऽहम्.

अर्थ—सिद्धोंके समान मेरी आत्मा भी तीनों जगतके द्वारा पूज्य है. प३.

लोकाग्रनिवासोऽहम्.

अर्थ—जिस प्रकार सिद्ध भगवान लोक-शिखर पर विराजमान है उसी प्रकार मेरी यह शुद्ध आत्मा भी लोक शिखर पर ही विराजमान है. प४.

त्रिजगद्वन्दितोऽहम्.

अर्थ—जिस प्रकार सिद्ध-परमेष्ठी तीनों लोकों के द्वारा वन्दनीय है उसी प्रकार मेरी यह शुद्ध आत्मा भी तीनों लोकों के द्वारा वन्दनीय है. प५.

चतुर्गति संसार दूर स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—जिस प्रकार अरुहंत भगवान का स्वल्प चारों गतियों में परिभ्रमण रूप संसार से सर्वथा दूर है, बिन्न है उसी प्रकार मेरी यह शुद्ध आत्मा भी चतुर्गति रूप संसार से सर्वथा दूर है. प६.

ज्ञानार्णव स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—यह परम शुद्ध आत्मा अनन्त ज्ञानरूप जलसे भरा हुआ एक समुद्रके समान है—ऐसे ही ज्ञानके समुद्रके समान मेरी आत्मा है अर्थात् मैं भी ऐसा ही हूँ. प७.

निर्व्यग्र सहजानंद सुखमयोऽहम्.

अर्थ—जिस प्रकार सिद्ध-परमेष्ठी सग तरल की व्यग्रता व आकुलता से रहित केवल शुद्ध आत्मा से उत्पन्न होने वाले स्वाभाविक आनंदमय सुखस्वरूप है उसी प्रकार यह शुद्ध आत्मा भी आकुलता रहित स्वाभाविक रूपसे उत्पन्न होने वाले आत्मजन्य सुख स्वरूप है. ५८.

घातिचतुष्टयरहितोऽहम्.

अर्थ—जिस प्रकार अरुंत भगवान का स्वरूप चारों घातिया-कर्मों से रहित है वैसे ही मेरी शुद्ध आत्मा का स्वरूप चारों घातिया-कर्मों से रहित है. ५९.

चिन्मात्र मूर्तीस्वरूपोऽहम्

अर्थ—मैं शुद्ध चैतन्यमात्रकी मूर्तिरूप ही हूँ. ६०.

त्रिजगद्गुरुस्वरूपोऽहम्.

अर्थ—जिस प्रकार भगवान अरुंतदेव तीनों जगतके गुरु हैं उसी प्रकार मेरी यह शुद्ध आत्मा भी तीनों जगतकी गुरु है. ६१.

अष्टादशदोषरहितोऽहम्.

अर्थ—जिस प्रकार अरुंत भगवान भूष-प्यास आदि अठारह दोषोंसे रहित हैं उसी प्रकार मेरी यह शुद्ध आत्मा भी अठारह दोषोंसे रहित है. ६२.

निरवद्य स्वरूपोऽहम्

अर्थ—यह परम शुद्ध आत्मा राग-द्वेषादिक समस्त निंद्य स्वभावसे रहित है. उसी प्रकार मैं भी रागादि समस्त निंदनीय भावोंसे रहित हूँ. ६३.

अतर्क्योऽहम्.

अर्थ—जिस प्रकार सिद्धोंके गुणों में “यह गुण है या नहीं?” इस प्रकार तर्क-वितर्क या ठिंसापेठ नहीं कर सकता उसी प्रकार मेरी शुद्ध आत्माके गुणों में भी कोई ठिंसापेठ नहीं कर सकता. ६४.

निरंजन स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—राग-द्वेष व आठ कर्मोंके अंजन कहते हैं. मेरी यह परम शुद्ध आत्मा राग-द्वेष वा आठ कर्मों से रहित होनेके कारण निरंजन स्वरूप है. ६५.

निज जीवतत्त्व स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—सिद्धोंके समान मेरी यह शुद्ध आत्मा भी अपने केवल छवइपी तत्त्वस्वरूप है, अन्य तत्त्वस्वरूप नहीं है. ६६.

क्षायिकज्ञान स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—अरहंत व सिद्धोंके समान मेरी यह शुद्ध आत्मा भी क्षायिकज्ञान या केवलज्ञान स्वरूप है. ६७.

परम समरसिक भावस्वरूपोऽहम्.

अर्थ—समता रससे भरे हुये भावोंके समरसिक भाव कहते हैं. परम समता इपी रससे भरपूर भाव अरहंत व सिद्धोंके होते हैं. उन्हींके समान मेरी यह आत्मा है. इसलिये मैं भी परम समरसिक भाव स्वरूप हूँ. ६८.

क्षायिकसम्यक्त्व स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—अरहंत व सिद्धोंके समान मेरी यह शुद्ध आत्मा भी क्षायिक सम्यक्त्व स्वरूप है. ६९.

त्रयोदशविधचारित्राचार स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—जिस प्रकार आचार्य-परमेष्ठी पांच प्रकारके भद्रावत, पांच सभिति और तीन गुप्तियोंके पालन करते हुये चारित्राचार स्वरूप है उसी प्रकार मेरी यह शुद्ध आत्माभी निश्चयरूप तेरह प्रकारका चारित्र पालन करता हुआ निश्चय चारित्र स्वरूप है. ७०.

राग द्वेष मोह क्रोध मान माया लोभ पंचेन्द्रिय विषय व्यापार मनोवचन कायकर्म भावकर्म द्रव्यकर्म नोकर्म ख्याति पूजा लाभ दृष्टश्रुतानुभूत भोगाकांक्षारूप निदान माया मिथ्यात्व शल्यत्रय गारवत्रय दंडत्रयादि विभावपरिणाम शून्योऽहम्.

अर्थ—मेरी आत्मा राग-द्वेष-मोहसे रहित है, क्रोध मान माया लोभसे रहित है. पांचों इंद्रियोंके विषयभूत समस्त व्यापारोंसे रहित है, मन वचन कायकी समस्त क्रियाओंसे रहित है, रागादिक भावकर्म ज्ञानावरण आदि द्रव्यकर्म और शरीरादि नोकर्मसे सर्वथा रहित है. अपनी प्रसिद्धि पूजा लाभ, अपने लिये दृष्ट भोग, सुने हुये वा अनुभव किये हुये भोगोंकी आकांक्षासे सर्वथा रहित है अर्थात् निदान-शल्यसे रहित है माया वा मायाचारी शल्यसे रहित है, तथा मिथ्या-दर्शनरूप शल्यसे रहित है, इसप्रकार तीनों शल्योंसे सर्वथा रहित है. रस-गारव ऋद्धि-गारव और स्वास्थ्य-गारव—इन तीनों गारव अर्थात् गौरवों अभिमानसे रहित है. मनोदंड, वचनदंड, कायदंड—इन तीनों दंडोंसे रहित है. इसप्रकार मेरी यह आत्मा समस्त विभाव परिणामोंसे रहित है अर्थात् मैं इन सभ विभाव परिणामोंसे शून्य हूँ, रहित हूँ. ७१.

पंचविध वीर्याचार स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—जिस प्रकार आचार्य-परमेष्ठीकी शुद्ध आत्मा में पांचों प्रकारका वीर्याचार सुशोभित है उसी प्रकार मेरी इस शुद्ध आत्मा में भी पांचों प्रकारका वीर्याचार विद्यमान है. ७२.

अवगाहन स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—आयुर्भङ्गे नष्ट होनेसे अवगाहन गुण प्रगट होता है. मेरी यह शुद्ध आत्मा भी आयुर्भङ्गे सर्वथा रहित है. इसलिये मैं भी अवगाहन स्वरूप या अवगाहन गुण सहित हूँ. ७३.

चैतन्यरत्नाकर स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—मैं शुद्ध रत्नत्रय से भरे हुये शुद्ध चैतन्य रूप रत्नाकर समुद्र रूप हूँ अर्थात् मेरी आत्मा में रत्नत्रय आदि अनन्त रत्न भरे हुये हैं. ७४.

चैतन्यपुंज स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—यह शुद्ध चैतन्यस्वरूप आत्मा अनंतज्ञान अनंतदर्शन आदि अनंत गुणोंका समूह है. इसी प्रकार मैं भी उन्हीं अनंत गुणों का पुंजरूप या समूह रूप हूँ. ७५.

अनन्तशक्ति स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—परम शुद्ध आत्माके समान मैं भी अनंत शक्ति स्वरूप अथवा अनंत वीर्य स्वरूप हूँ. ७६.

सदानन्द स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—मेरी यह आत्मा सदा काल या अनंतानंत काल तक रहने वाले परमोत्कृष्ट आनन्दमय है. ७७.

परमसूक्ष्म स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—नामभङ्गे सर्वथा अभाव होनेसे सिद्धोंमें सूक्ष्मत्वगुण प्रगट होता है. मेरी आत्मा भी नामभङ्गे सर्वथा अभाव होनेसे परम सूक्ष्मस्वरूप है. ७८.

निश्चय पंचाचार स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—जिस प्रकार सिद्ध भगवान् निश्चयरूप पंचाचार स्वरूप है उसी प्रकार निश्चय पंचाचाररूप मेरी आत्मा है. ७९.

चैतन्याभरद्रुम स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—मैं शुद्ध चैतन्यमय कल्पवृक्ष स्वरूप हूँ. ८०.

अव्याबाध स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—वेदनीय कर्मके नष्ट होनेसे सिद्धोंमें अव्याबाधगुण प्रगट होता है. मेरी यह शुद्ध आत्मा भी वेदनीय कर्मसे सर्वथा रहित है. धंसलिये मैं भी अव्याबाधमय हूँ. ८१.

निरिन्द्रिय स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—सिद्धोंके समान मेरी यह शुद्ध आत्मा भी पांच प्रकारकी इन्द्रियोंसे सर्वथा रहित है. ८२.

निर्मोह स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—सिद्धोंके समान मेरी यह शुद्ध आत्मा भी मोह से सर्वथा रहित है. ८३.

सकलविमल केवलज्ञानादि गुणसमेतोऽहम्.

अर्थ—भगवान् सिद्ध-परमेष्ठीके समान मेरी यह शुद्ध आत्मा अत्यन्त निर्मल जैसे केवलज्ञान आदि समस्त गुणोंसे सुशोभित है. ८४.

नियोग स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—सिद्धोंके समान मेरी यह शुद्ध आत्मा भी मन, वचन, काय धन तीनों योगोंसे रहित है. ८५.

ऊर्ध्वगति स्वभावोऽहम्.

अर्थ—जिस प्रकार सिद्ध-परमेष्ठी स्वाभाविक ऊर्ध्वगति-स्वभाव होनेसे लोक के अग्रभाग पर जाकर विराजमान हुये है उसी प्रकार स्वाभाविक रूपसे ऊर्ध्व या उपरकी ओर ही गमन करने वाला मेरा स्वभाव है. ८६.

अचिन्त्योऽहम्.

अर्थ—जिस प्रकार सिद्धोंके पूर्ण गुणोंका कोर्ष चिंतन नहीं कर सकता. उसी प्रकार मेरी शुद्ध आत्माके भी पूर्ण गुणोंका कोर्ष चिंतन नहीं कर सकता. ८७.

परमज्योति स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—जिस प्रकार सिद्ध भगवान् केवलज्ञान तथा केवलदर्शनरूप परम ज्योति स्वरूप है उसी प्रकार मेरी यह शुद्ध आत्मा भी केवलज्ञान तथा केवलदर्शनको धारण करनेवाली परम प्रकाशमय ज्योतिस्वरूप है. ८८.

सप्तभय विप्रमुक्त स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—आचार्य-परमेष्ठीके समान मेरी भी यह शुद्ध आत्मा सातों प्रकारके भयसे रहित है, निर्भयरूप है. ८९.

नव केवललब्धि स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—जिस प्रकार अरुहंत भगवान् क्षायिक सम्यक्त्व, क्षायिक ज्ञान, क्षायिक दर्शन, क्षायिक आरित्र, क्षायिक भोग, क्षायिक उपभोग, क्षायिक दान, क्षायिक लाभ और क्षायिक वीर्य—धन नौ लब्धियोंसे सुशोभित रहते हैं उसी प्रकार मेरी यह शुद्ध आत्मा भी उपर लिप्पी नौ लब्धियोंसे—केवलज्ञानके साथ रहनेवाली नौ लब्धियोंसे-सुशोभित रहता है. ९०.

भूतार्थ षडावश्यक स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—जिस प्रकार आचार्य-परमेष्ठी निश्चयरूप छह आवश्यकोंको पालन करते हैं उसी प्रकार मेरी भी यह शुद्ध आत्मा निश्चयरूप छह आवश्यकोंको पालन करती है. इसलिये मैं भी निश्चय छह आवश्यक-रूप हूँ. ८१.

विशिष्टाष्ट गुण पुष्ट स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—जिस प्रकार सिद्ध-परमेष्ठी क्षायिक सम्यक्त्व, अनन्त केवलज्ञान, अनन्त केवलदर्शन, अनन्त वीर्य, परम सूक्ष्मत्व, अवगाहनत्व, अव्याप्यत्व, अगुरुलघु धन आठों गुणोंसे सदाकाल परिपुष्ट रहते हैं उसी प्रकार मेरी यह शुद्ध आत्मा भी उपर लिखे गुणोंसे सदाकाल पुष्ट रहती है. इसलिये मैं भी धन आठों गुणमय हूँ. ८२.

अष्टविध दर्शनाचार स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—जिस प्रकार आचार्य-परमेष्ठी सम्यग्दर्शन के निःशक्ति, निःकांक्षित, निर्विचिकित्सा, अमूढदृष्टि, उपगूहन, स्थितिकरण, वात्सल्य और प्रभावना धन आठ अंगोंको निश्चयरूपसे पालन करते हुये दर्शनाचार स्वरूप है उसी प्रकार मेरी यह शुद्ध आत्मा भी उपर लिखे आठों प्रकारके दर्शनाचारको पालन करता हुआ दर्शनाचार स्वरूप है. ८३.

क्षायिकदर्शन स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—अरुहंत व सिद्धोंके समान मेरी यह शुद्ध आत्मा भी क्षायिकदर्शन या केवलदर्शन स्वरूप है. ८४.

अन्तरंग रत्नत्रय स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—सिद्धोंके समान मेरी यह शुद्ध आत्मा भी अपने अंतरंगमें अपनी शुद्ध आत्मामें रत्नत्रय स्वरूप है. ८५.

द्वादशविध तप आचार स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—जिस प्रकार आचार्य-परमेष्ठी अन्तरंग-अहिरंगके भेदसे आरु प्रकारके तपश्चरणको पालन करते हुये तपश्चरण स्वरूप है उसी प्रकार मेरी यह शुद्ध आत्मा भी आरु प्रकारके निश्चय तपश्चरणको पालन करता हुआ तप-आचार स्वरूप है. ८६.

पंचमभाव स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—सिद्धोंके समान मेरी यह शुद्ध आत्मा भी पंचमभाव अर्थात् केवल अभाव स्वरूप है. अन्य चारों प्रकारके भावोंसे रहित है. ८७.

परम समाधि स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—परम शुक्लध्यानको परम समाधि कहते हैं. मेरी यह आत्मा भी परम शुक्लध्यानमय है, इसलिये मैं परम समाधि स्वरूप हूँ. ८८.

निर्वेदा स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—जिस प्रकार सिद्ध-परमेष्ठी स्त्रीलिंग, पुल्लिंग, नपुंसकलिंग—इन तीनोंसे रहित है उसी प्रकार मेरी यह शुद्ध आत्मा भी तीनों लिंगोंसे रहित परमानन्दमय है. ८९.

क्षायिकचारित्र स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—अरुंत व सिद्धोंके समान मेरी यह शुद्ध आत्मा भी क्षायिकचारित्र स्वरूप है. ९०.

शुद्ध जीवद्रव्य स्वरूपोऽहम्.

अर्थ—अव द्रव्यका जे परम शुद्ध स्वरूप है, वही स्वरूप मेरी शुद्ध आत्माका है. ९१.

सोऽहम्.

अर्थः—मैं वही हूँ. जिस प्रकार सिद्ध भगवानकी शुद्ध आत्मा समस्त कर्मोंसे रहित है वैसे ही मैं हूँ. १०२.

निजनिरंजन स्वशुद्धात्म सम्यक्श्रद्धान ज्ञानानुष्ठान-रूपो भेदरत्नत्रयात्मक निर्विकल्प समाधिसंजात वीतराग-सहजानंद सुखानुभूतिरूपमात्र लक्षणेन स्वसंवेदनज्ञान सम्यक्प्राप्त्या भरितविज्ञानेन गम्यप्राप्त्या भरितावस्थोऽहम्.

अर्थ—मेरी यह आत्मा समस्त कर्म वा विकारों से रहित स्वयं शुद्ध स्वरूप है. इस शुद्ध स्वरूप अवस्था में, अपनी उसी शुद्ध आत्मा का ज्ञे श्रद्धान होता है उसी का ज्ञान होता है और उसी शुद्धात्म-स्वरूप में लीन होने रूप क्रिया या चारित्र होता है. इस प्रकार शुद्ध आत्मस्वरूप अभेदरत्नत्रय की प्राप्ति होती है, तथा इस अभेद रत्नत्रय से निर्विकल्प (जिसमें कोई विकल्प न हो) समाधि या ध्यान प्राप्त होता है. इस ध्यान में ज्ञे वीतराग और स्वाभाविक आनन्द तथा सुख प्राप्त होता है वही वीतराग सहजानंद सुख ही मेरे आत्मा का लक्षण है. उसी वीतराग सहजानंद से मेरी आत्मा में स्वसंवेदन अर्थात् अपने शुद्ध आत्मा का अनुभव रूप ज्ञान की प्राप्ति बहुत उत्तम रूप से हो जाती है. उसी आत्मा के अनुभव रूप ज्ञान की प्राप्ति से स्वात्मा में लीन होने रूप सम्यक्चारित्र की प्राप्ति हो जाती है. इस प्रकार मुझे परम शुद्ध सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र रूप अभेद रत्नत्रय की प्राप्ति हो जाती है. उसी अभेद रत्नत्रय से मेरी यह आत्मा पूर्ण रूप से भरपूर हो रहा है. परमध्यान में अपने शुद्ध आत्मा का ध्यान इसी प्रकार करना चाहिये. १०३.

| पूज्य गुरुदेवश्रीनी उपस्थितिमां आ ब्रंथ कन्तडभापामां न प्राप्य होवाधी अहु प्रयलित नहते. श्री परमात्मप्रकाशना टीकाकारतुं 'अतिम-कथन' तथा श्री जय-सेनाचार्यनी टीकातो आधार आपीने तेमज लीकिक नाटकता कथन—येटा! सिद्ध छे! शुद्ध छे! आदि—आधार आपीने पूज्य गुरुदेवश्री प्रयोजनभूत भावनाते जे अध्यात्म-भस्तीथी लडावतां हता, उछाणतां हता ते वगते जे आ ब्रंथतुं भापांतर उपलब्ध थयुं होत तो...!! आडाडा! अकतोने भगवान तरीके जेनारा आपणा भावि-भगवान गुरु-कहानना अरुणामां कोटी कोटी वंदन...कोटी कोटी वंदन]

સુવર્ણપુરી સમાચાર

—તંત્રી

* સુવર્ણપુરી—અધ્યાત્મતીર્થધામમાં નિર્મિત ૬૩ ફૂટના ઉન્નત 'શ્રી સીમંધર-જિન-માનસ્તંભ'ની ૪૦મી વાર્ષિકતિથિ ચૈત્ર સુદ-૧૦, તા. ૧૨-૪-૯૨ના રોજ પૂજા-ભક્તિના વિશેષ કાર્યક્રમ દ્વારા આનંદોલ્લાસપૂર્વક ઉજવાઈ હતી.

* મહાવીર-જયંતી તેમજ આપણા સૌના તારણહાર વહાલા ધર્મપિતા પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રીના પદમે સંપ્રદાય-પારવર્તન-દિન અત્યંત આનંદોલ્લાસપૂર્વક ઉજવવામાં આવ્યો હતો. સવારે સમૂહ પૂજન બાદ, પરમ પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રીએ જે નિવાસસ્થાને (સ્ટાર ઓફ ઇન્ડિયા) પરિવર્તન કરેલું તે સ્ટાર ઓફ ઇન્ડિયામાં ૧૯૬૬માં પ્રવચન આપેલું તે જ ટેપ-પ્રવચન વગાડવામાં આવતાં, જાણે કૃપાળુ પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રી આપણા સૌની સમક્ષ ઉપસ્થિત હોય તેવો આનંદ અનુભવાયો હતો. ખીજા ધાર્મિક દૈનિક કાર્યક્રમે ઉપરાંત સાંજે સ્ટાર ઓફ ઇન્ડિયામાં વિશાળ મુમુક્ષુ સમુદાયે ગુરુભક્તિનો હવાવો લીધો હતો. આ અત્યંત પુનિત પ્રસંગે શ્રી શામજીભાઈ ભાણુજીભાઈ છેડા, ચારેમાં અને શ્રી પ્રેમજીભાઈ દેવજીભાઈ જૈન-મલાડ તરફથી સમસ્ત મુમુક્ષુમંડળને સ્વામીવાસસ્થભોજન (કાયમી) આપવામાં આવ્યું હતું.

[પરમ પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રીના પ્રસન્નમુદ્રાયુક્ત અત્યંત આકર્ષક ભવ્ય ફોટો (એકેડીકશીટ ઉપર લેમીનેશન કરેલો) સોનગઢના રેલ્વે સ્ટેશનના મુખ્ય-ગેઈટ ઉપર એવો રીતે મૂકવામાં આવ્યો છે કે દ્રેઈનના મુસાફરોનું ધ્યાનાકર્ષિત થાય અને જોતાં પ્રસન્નતા થાય.]

✽ ઘાટકોપરમાં સુસમ્પન્ન શિલાન્યાસ-મહોત્સવ : —

અનંત ઉપકારમૂર્તિ પરમ પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રી તેમજ તેમના સદુપદેશ વડે સ્વાતુભૂતિ-પ્રાપ્ત પૂજ્ય અહિનશ્રીના ધર્મપિકાર-પ્રતાપથી મુંબઈના ઉપનગર ઘાટકોપરમાં આવેલ શ્રી તેમિનાથસ્વામી દિ. જિનમંદિરમાં નિર્માણાધીન 'શ્રી ગુરુ-સ્મૃતિમંદિર' તેમજ 'શ્રી કુંદકુંદકહાન સ્વાધ્યાયમંડપ'ની શિલાન્યાસવિધિ, પરમ પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રીના 'પરિવર્તન'ની પદમી જયંતી અને 'મહાવીર-જયંતી'ના રોજ (તા. ૧૫-૩-૯૨) બૃહદ્ મુંબઈના ૨૫૦૦ થી અધિક મુમુક્ષુઓની આનંદોલ્લાસભીની ઉપસ્થિતિમાં અતિ ભવ્યતા-પૂર્વક સમ્પન્ન થઈ હતી. 'શ્રી ગુરુ-સ્મૃતિ-મંદિર'ના શિલાન્યાસની વિધિ તથા 'શ્રી કુંદકુંદ-

કહાન-સ્વાધ્યાયમંડપ 'ના શિલાન્યાસની વિધિ અનુક્રમે શ્રી બાબુલાલ નાનજીભાઈ શાહ-પરિવારે તથા શ્રી જ્યોતિષેન મહામુખલાલ દોશી-પરિવારે કરી હતી. આ પ્રસંગે ઉપસ્થિત સર્વે મુમુક્ષુને શ્રી ધીરજીલાલ ભવાનભાઈ શાહ અને શ્રી ધીરજીએન બાબુલાલ નાનજીભાઈ શાહ પરિવાર દ્વારા સ્વામીવાત્સલ્યભોજન આપવામાં આવ્યું હતું.

* ખંડવામાં સુસમ્પન્ન આદિનાથ દિ. જિનમંદિરનો શિલાન્યાસ :

ખંડવા શહેર (મધ્યપ્રદેશ)ના શ્રી આદિનાથ કુંદકુંદ-કહાન દિ. જૈન સ્વાધ્યાય-મંદિર ટ્રસ્ટ દ્વારા નવનિર્માણાધીન ' શ્રી આદિનાથ દિ. જિનેમંદિર 'ની મંગલ શિલા-ન્યાસવિધિ તા. ૨૪-૪-૯૨ શુક્રવારના રોજ કલકત્તાનિવાસી શ્રી અંજનભાઈ શાંતિલાલ દ્લીચંદ શાહ અને તેમના ધર્મપત્ની શ્રી નયનાએન અંજનભાઈ શાહના શુભ હસ્તે જે હજારથી અધિક મુમુક્ષુઓની આનંદોદ્દાસણીની સમુપસ્થિતિમાં અતિ આનંદકારી વાતાવરણમાં સુસમ્પન્ન થઈ હતી. આ મંગળ અવસરે મુંબઈ, સોનગઢ, આગરા, સનાવદ, ભોપાલ, ઈન્દોર, અંકલેશ્વર આદિ અનેક ગામથી ૫૦૦ થી અધિક પધારેલાં મહેમાનોની શુશ્રૂષા ખંડવા-મુમુક્ષુમંડળે અતિ આદરભાવે કરી હતી. આ પ્રસંગે ' શ્રી આદિનાથ-કુંદકુંદ-કહાન દિ. જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ 'ને સાત લાખ રૂપિયાની આવક થઈ હતી. પરમ પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રી તેમજ પૂજ્ય બહેનશ્રીના પ્રભાવનોદય-પ્રતાપે સુસમ્પન્ન શિલાન્યાસના આ મંગલ અવસરે અધ્યાત્મપ્રધાન જૈનધર્મની ઘણી પ્રભાવના થઈ હતી.

* તા. ૩૦-૪-૯૨થી ૧૯-૫-૯૨ સુધી રાખવામાં આવેલ. ધાર્મિક શિક્ષણવર્ગ નિયમિત ચાલી રહ્યો છે. જેના વિસ્તૃત સમાચાર આગામી અંકમાં પ્રકાશિત કરવામાં આવશે.

* શ્રુતચંચમી પર્વ :—જેઠ સુદ-૫, શુક્રવાર તા. ૫-૬-૯૨ના રોજ શ્રી ૫૨ ખંડા-ગમન પૂજાભક્તિપૂર્વક ઉજવવામાં આવશે.

* ૧૦૩મી કહાનગુરુ-જન્મજયંતી :—જૈનજગતમાં તીર્થંકરોનાં જન્મકલ્યાણક-દિનનું જેવું મહત્ત્વ છે તેવું જ મહત્ત્વ મુમુક્ષુજગતમાં તીર્થંકરોપમ-તારણહાર આપણા પરમોપકારી ગુરુદેવના મંગલ જન્મદિનનું છે. જન્મજયંતી-મહોત્સવના આનંદકારી વિસ્તૃત સમાચાર માટે આગળ જુઓ :—

સુવર્ણપુરીમાં આનંદ સમ્પન્ન

૧૦૩મી

કહાનગુરુ જન્મજયન્તી-મહોત્સવ

આ યુગના સ્વાનુભૂતિતીર્થ-ધુરંધર મુમુક્ષુજગતારણહાર આપણા પરમ પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રી કાનજીસ્વામીની ૧૦૩મી ભક્તજન-આનંદકારિણી મંગલ જન્મજયન્તી (વૈશાખ સુદ ૨) તેઓશ્રીની સાધનાભૂમિ અધ્યાત્મ-અતિશયક્ષેત્ર શ્રી સુવર્ણપુરી (સાનગઢ)માં ૩૦ એપ્રિલથી ૪ મે—પાંચ દિવસના ભવ્ય સમારોહપૂર્વક અત્યંત આનંદોલ્લાસ સાથે ઉજવાઈ. વીતરાગમાર્ગદાતા પરમોપકારી પૂજ્ય ગુરુદેવના પ્રતિ ઉપકૃત ભાવભીના ભક્તિઉલ્લાસ ચારે બાજુ દેખાતો હતો. પરંતુ સુવર્ણપુરીના તથા અન્ય મુમુક્ષુઓના હૃદયપટમાં ગુરુદેવ પ્રત્યે અસીમ ભક્તિઉલ્લાસ સાથે સાથે થોડી ઉદાસીના પણ અનુભવ થયો હતો. આ ઉદાસીનું કારણ હતું કહાનગુરુ-ઉપકાર મહિમા સમજાવનાર ભગવતી માતા પ્રશમમૂર્તિ પૂજ્ય બહેનશ્રી ચંપાબહેનની સદેહે અનુપસ્થિતિ ! જે પૂજ્ય બહેનશ્રીની ગુરુભક્તિ પ્રેરક મંગળ ઉપસ્થિતિ હોત તો આ ગુરુ-જન્મજયન્તી-મહોત્સવની રોનક તો કાંઈ નિરાળી જ હોત ! ગુરુદેવ દ્વારા ઉપદેશિ સમ્યક્ત્વ તથા સ્વાનુભૂતિમૂલક અધ્યાત્મતત્ત્વની તથા એમના અસાધારણ ઉપકારોની મુમુક્ષુઓના હૃદયમાં પોતાના ગુરુભક્તિભીના ઉપદેશો દ્વારા બહેનશ્રીએ જે સતત જમાવટ કરી છે તે કારણથી તે ઉપકારમૂર્તિ આપણા માટે હંમેશા અવિસ્મરણીય છે. મુમુક્ષુસમાજે તે કલ્યાણીમૂર્તિને પોતાના હૃદયમાં રાખી ગુરુજન્મજયન્તી આત હર્ષાનંદપૂર્વક ઉજવી.

કહાનગુરુ-જન્મજયન્તીના આ ભવ્ય મહોત્સવમાં દેશ-વિદેશનાં ૨૨૦૦થી વધુ મુમુક્ષુઓએ ભાગ લીધો હતો. પરમ પૂજ્ય ગુરુદેવ તથા પૂજ્ય બહેનશ્રી પ્રત્યે શ્રદ્ધાવંત મુમુક્ષુઓ દ્વારા આપણા આદરણીય આદર્શ આત્માર્થી ગુરુભક્ત પંડિતજી શ્રી હિંમતલાલભાઈ જેઠાલાલ શાહની ગુરુભક્તિભીની ઉપસ્થિતિમાં ઉજવાયેલો આ ગુરુભક્તિ-મહોત્સવ સાથે જ ધર્મ-પ્રભાવનાપૂર્ણ તથા આનંદદાયક રહ્યો !

આ મંગલ જન્મજયન્તી-મહોત્સવ ઉજવવાનું સોભાગ્ય જેમને પ્રાપ્ત થયેલ તે શ્રી વિનોદરાય કાનજીભાઈ કામદારના પૂરા પરિવારે ગુરુ-જન્મજયન્તી મહોત્સવ અત્યંત આનંદોલ્લાસપૂર્વક ઉજવવા માટે મહિનાઓ પહેલાંથી ઉત્સવની તૈયારી શરૂ કરી

દીધી હતી. રૂ. ૧૧૦૦૦૦નું દર્પણ-કાચ-નિર્મિત નવનરમ્ય વિધાન-પૂજન માટેનું માંડણું શ્રી પંચપરમેષ્ઠી-વિધાનપૂજા માટે બનાવરાવ્યું હતું—જે ઉત્સવ બાદ સંસ્થાને સોંપી દીધેલ હતું. જન્મજયંતીને અનુરૂપ અનેક મુંદર સુશોભનો તેઓએ પાતાના હાથે તૈયાર કરેલ હતાં.

આ ગુરુજન્મજયંતી-મહોત્સવમાં પ્રતિદિન સવારે પૂજ્ય બહેનશ્રી સ્વાતુલવ-રસભીની ઓડિયો ધર્મચર્યા, નિત્યદર્શનપૂજા, ગુરુભક્તિપદોથી અંકિત ભવ્ય 'બેનર' તથા વિવિધ શૃંગારથી સજ્જવેલા ભવ્ય મંડપમાં, પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રીનાં સમયસાર-ગાથા ૩૧, ૩૨ અને ૧૭-૧૮ ઉપર અધ્યાત્મપ્રવચન, ગુરુભક્તિ તથા ત્યારબાદ પરમાગમમંદિરમાં પંચપરમેષ્ઠી-મંડલવિધાનપૂજા, ધાર્મિક શિક્ષણવર્ગ, બપોરે સમાગત વિદ્વાનો દ્વારા 'ગુરુદેવશ્રીનાં વચનામૃત' પર શાસ્ત્ર-પ્રવચન, પરમાગમમંદિરમાં જિનેન્દ્રભક્તિ તથા ગુરુભક્તિ, સાંજે ઘાટકોપર તથા વઢવાણની ભજનમંડળી દ્વારા ગુરુભક્તિ, પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રીનું 'પરમાત્મપ્રકાશ' શાસ્ત્ર પર ટેપ પ્રવચન તથા તીર્થયાત્રાની વિડિયો દ્વારા ગુરુદર્શન તથા બહેનશ્રીની વિડિયો ધર્મચર્યા—આ રીતે કાર્યક્રમ નિત્ય ચાલતો હતો. દરેક કાર્યક્રમમાં મુમુક્ષુઓની વિશાળ ઉપસ્થિતિથી જગ્યા ભરાઈ જતી હતી.

'ગુરુ જન્મજયંતી'ના હર્ષોલ્લાસમાં, ૩ મેના દિવસે બપોરે 'ધાતકી વિદેહના ભાવિ જિનવર'ની ભવ્ય રથયાત્રાનું આયોજન કર્યું હતું, રથયાત્રામાં અનેક ભવ્ય સજ્જવટ સાથે 'કહાનકુંવરનું પાલના-ઝૂલન'નું ફ્લોટ (FLOT) પણ કાઢ્યું હતું. ભાવિ જિનવરની ભવ્ય રથયાત્રાના દર્શન માટે ગ્રામજનતા પણ સ્થાન-સ્થાન પર જમા થઈ ગઈ હતી. વિશાળ રથયાત્રા જોઈને ગ્રામજનતા પૂજ્ય ગુરુદેવની અસાધારણ મહાભાવનું સ્મરણ કરતી હતી. બંને ભજનમંડળીઓએ ભક્તિભીનું રોચક વાતાવરણ બનાવી દીધું હતું. રાત્રે બાલિકાઓ દ્વારા સાંસ્કૃતિક કાર્યક્રમ પ્રસ્તુત કરવામાં આવ્યો હતો.

ગુરુભક્તિના આ ભવ્ય ઉત્સવમાં ઉપસ્થિત વિદ્વાન ડૉ. શ્રી પ્રવિણભાઈ દોશી (રાજકોટ), સુરેશભાઈ સંઘવી (મુંબઈ), ત્રિમનભાઈ માદી (મલાડ) તથા શ્રી હિંમતભાઈ ડગલી (વીંછ્યા) એ ગુરુમહાભા ભરપૂર શાસ્ત્રપ્રવચન આપ્યું હતું. ભક્તિ બંને ભજનમંડળીઓએ કરાવી હતી.

* જન્મજયંતી—વૈશાખી ખીજ *

ગુરુજન્મજયંતીના દિવસે, પૂજ્ય ગુરુદેવના પ્રવચનમુદ્રાયુક્ત અનેક મનોહર નાના સ્ટેચ્યુથી વિભૂષિત પ્રવચનપંડાલમાં પૂજ્ય ગુરુદેવના સ્ટેચ્યુ સમક્ષ પ્રાતઃ દર્શન તથા સદ્ગુરુસ્તુતિ, પૂજ્ય ગુરુદેવ તથા પૂજ્ય બહેનશ્રીનું વિડિયો 'માંગલિક', પૂજ્ય

બહેનશ્રીની વિડિયો ધર્મચર્યા, ત્યારબાદ કમરમાં શ્રી પરમાગમમંદિરમાં પંચપરમેષ્ઠી-મંડલવિધાનપૂજા તથા તેનું સમાપન, પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રીનું સમયસારની ૧૭-૧૮મી ગાથા પર ટેપ પ્રવચન, રજત-કુમકુમ ચોખા વડે પૂજ્ય ગુરુદેવના સ્ટેચ્યૂ સમક્ષ જન્મવધાર્થ. બપોરે શાસ્ત્રપ્રવચન, ગુરુભક્તિ, સાંજે ચિત્તેન્દ્ર-આરતી, 'પરમાત્મપ્રકાશ' શાસ્ત્ર પર પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રીનું ટેપ-પ્રવચન, તીર્થયાત્રા-વિડિયો દ્વારા ગુરુદેવશ્રીના દર્શન તેમજ બહેનશ્રીની વિડિયો-ધર્મચર્યા.

શ્રી કહાનગુરુ-જન્મજયંતીના મંચલ અવસર પર 'કાયમીમંડલવિધાનપૂજા—

(૧) પ્રશમમૂર્તિ ભગવતી પૂજ્ય બહેનશ્રી ચંપાબેન તથા કેટલાક ઓ બહેનો,

સોનગઢ;

(૨) શ્રી જડાવબેન નાનાલાલભાઈ જસાણી પરિવાર, મુંબઈ

(૩) શ્રી પુરુષોત્તમદાસ ઓઘડદાસ કામદાર તથા શ્રી જવેરીબેન પુરુષોત્તમદાસ કામદાર પરિવાર, મુંબઈ

(૪) શ્રી વ્રજલાલ જેઠાલાલ શાહ, સોનગઢ (હા. શ્રી જિતુભાઈ)

(૫) શ્રી અમરચંદભાઈ વાલજીભાઈ ડગલી પરિવાર (હા. શ્રી રૂપાળીબેન ડગલી),

સંડન;

(૬) શ્રીમતી ચંદનબેન તથા શ્રી કનુભાઈ મણિલાલ પુનાતર પરિવાર, જામનગર

(૭) ઓ શારદાબેન જયમુખલાલ સંઘાણી, રાજકોટ

(૮) શ્રી જયંતીલાલ બેચરદાસ દોશી, ઘાટકોપર

(૯) શ્રી ધારશીભાઈ જટાશંકર મેહતા, વવાણિયા-મોરબી

(૧૦) શ્રી હિંમતલાલ છોટાલાલ બેખાલિયા પરિવાર, સોનગઢ

(૧૧) શ્રી મનમુખલાલ હરીલાલ દોશી પરિવાર, મુંબઈ

(૧૨) શ્રી અરવિંદભાઈ નંદલાલ પ્રાગજી મહેતા, ઉમરાળાવાળા

(૧૩) કલાબેન હસમુખલાલ પોપટલાલ વોરા, મુંબઈ

(૧૪) શ્રી રળિયાતબેન રાયચંદભાઈ શાહ, નાઠરોબી (રાયચંદભાઈના માતૃશ્રી

વેણબેન, મામા રામજી રૂપશી અને મામી ગંગાબેન રામજીભાઈના સ્મરણાર્થે)

તથા પ્રાસંગિક મંડલવિધાનપૂજા—

૧. શ્રી જયંતીલાલ મણિલાલ ભાયાણી (સ્વ. દીપ્તિ જયમુખલાલ ભાયાણીના સ્મરણાર્થે) ૨. સ્વ. શ્રી હરિલાલ શિવલાલ દોશી, અમદાવાદ

૩. સ્વ. ધનવંતરાય વ્રજલાલ કોઠારી (હા. સુપુત્ર નવીન, ભરત, દિનેશ), ભાવનગર

૪. શ્રી પ્રભુલાલ તારાચંદ કામદાર, સોનગઢ

૫. સ્વ. કેશવલાલ કસ્તૂરચંદ શાહ તથા સ્વ. છબ્બલબેન કસ્તૂરચંદ ભડકવા-
વાળા (હસ્તે સરલાબહેન શાહ)

૬. શ્રી ગોપાલજી મહેતા (હસ્તે ડા. જામન મહેતા), ઉદયપુર

૭. સ્વ. ઝવેરીબેન પીતાંબરદાસ મહેતા, સોનગઢ

૮. શ્રી વિનોદરાય કાનજીભાઈ કામદાર-પરિવાર, રાજકોટ

૯. શ્રી સવિતાબેન શાહ (હસ્તે ભરતભાઈ), મીઠાપુર

૧૦. શ્રેયસભાઈ પ્રફુલભાઈ રાજ, નાઠરોળી

૧૧. શ્રી મંગુલાબેન શિવલાલ ડગડી, બોટાદ

—તરફથી રાખવામાં આવી હતી.

શ્રી ગુરુજન્મજયંતીના અવસર પર નીચે જણાવેલ મહાનુભાવો તરફથી ઉપસ્થિત
મહેમાનો માટે પ્રાતઃ અદ્યાહાર તથા બંને સમયના ભોજન રાખવામાં આવ્યા હતા.

(૧) શ્રી વિનોદરાય કાનજીભાઈ કામદાર-પરિવાર, રાજકોટ (૨) સ્વ૦ શારદાબેન
ભોગીલાલ દોશી-પરિવાર, ઘાટકોપર; (૩) શ્રી સમતાબેન માણેકલાલ શાહ-પરિવાર,
(હા. બાબૂભાઈ માણેકલાલ શાહ), ખાર; (૪) શ્રી રળિયાતબેન રાયચંદભાઈ શાહ
(શ્રી રાયચંદભાઈના માતૃશ્રી વેળબેન, મામા રામજી રૂપશી, મામી ગંગાબેન રામજીની
સ્મૃત્યર્થ), નાઠરોળી; (૫) શ્રી જયસુખલાલ પોપટલાલ સંઘાણી (હા. બ્ર. શારદા-
બેન), રાજકોટ.

જન્મજયંતી—ઉત્સવના દિવસોમાં ધાર્મિક સાહિત્યમાં ૪૦% ડિસ્કાઉન્ટ નીચે
જણાવેલ મહાનુભાવો તરફથી રાખ્યું હતું.

(૧) ૧૦% શ્રી કમળાબેન હસમુખલાલ પોપટલાલ વોરા, મુંબઈ

(૨) ૧૦% શ્રી સપાણી પરિવાર, મદ્રાસ, હૈદરાબાદ (હ. શ્રી વસંતબેન ધીરજલાલ
દલપતભાઈ સપાણી તથા શ્રી નીરવ મહેન્દ્રભાઈ પ્રભુલાલભાઈ સપાણી)

(૩) ૧૦% શ્રી પૂરીબેન શીવલાલ ગાંધી (હા. શ્રી નિખિલભાઈ પ્રતાપરાય ગાંધી)

(૪) ૧૦% શ્રી ખાદીવાળા પરિવાર, ભાવનગર

પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રીનાં પ્રવચનો તથા પૂજ્ય બહેનશ્રીની તરવચચાની કેસેટમાં
રાજકોટનિવાસી સ્વ૦ શ્રી પ્રભુલાલ મોહનલાલ ધીયા તથા એક મુમુક્ષુબેન (હસ્તે
શ્રી જોડીબેન ચંદુલાલ દોશી) રાજકોટ તરફથી પાંચ દિવસો માટે ૨૫% ડિસ્કાઉન્ટ
આપવામાં આવ્યું હતું.

શ્રી સમયસાર-પ્રવચનરતનાકરમાં ૨૫% ડિસ્કાઉન્ટ શ્રી પ્રવિણચંદ્ર ભગવાનજી સંઘવી, અમદાવાદ અને ૨૫% ડિસ્કાઉન્ટ શ્રી શૈલાબેન ચંદ્રકાંત મહેતા, સોનગઢ તરફથી રાખવામાં આવ્યું હતું.

આ શુભ અવસર પર શ્રી વિનોદભાઈ કાનજીભાઈ કામદાર પરિવારે જે રકમ દાનમાં આપી તે ઉપરાંત સંસ્થાને નીચે મુજબ કુલ રૂ. ૨,૫૫,૦૧૨ની આવક થઈ હતી.

(૧) જન્મ વધાર્થ પ્રસંગે	રૂ. ૧૨૦૩૨-૧૦
(૨) રથયાત્રાની બોલી તથા પારણાજૂલનમાં	રૂ. ૨૫૭૩૯-૯૦
(૩) રજત-કુમકુમ દ્વારા ગુરુજન્મવધાર્થમાં	રૂ. ૯૩૬૭૦-૦૦
(૪) જિતેન્દ્ર આરતીની બોલીમાં	રૂ. ૧૩૫૨-૦૦
(૫) ૧૦૩મી જન્મજયંતીના ઉપલક્ષમાં ૬૦૬x૧૦૩	રૂ. ૬૨૪૧૮-૦૦
(૬) પ્રાસંગિક મંડલવિધાનપૂજામાં	રૂ. ૧૧૦૧૧-૦૦
(૭) અન્ય શુભ ખાતામાં	રૂ. ૪૮૭૮૯-૦૦

—*—

* કહાન-વાત્સલ્યકેન્દ્રનું ઉદ્ઘાટન *

૩-૪-૯૨ના રોજ રથયાત્રા દરમિયાન સોનગઢ-ખજારમાં 'શ્રી કહાનગુરુ-જન્મકલ્યાણ ટ્રસ્ટ, સોનગઢ'—સંચાલિત 'કહાન-વાત્સલ્ય કેન્દ્ર'ના ઉદ્ઘાટનનું આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું. ટ્રસ્ટના માનનીય પ્રમુખ શ્રી હસમુખલાલ પોપટલાલ વોરાના મુખ્ય હસ્તે ઉદ્ઘાટન કરવામાં આવ્યું હતું. 'કહાન-વાત્સલ્યકેન્દ્ર'ના સંચાલનમાં સોનગઢ-રામપંચાયત તેમજ 'કહાન-વાત્સલ્ય કેન્દ્ર' સેવાભાવી કાર્યકરોનો પ્રશંસનીય સહયોગથી પ્રાપ્ત છે. આ કેન્દ્ર દ્વારા આવશ્યકતા-અનુભવ કરનારી ગ્રામજનતાને છાસ, દુધ મુખથી તેમ જ જૂના વસ્ત્રો આપવાની વ્યવસ્થા-આયોજન આધીન છે. છાસ તથા દુધનો ખર્ચ આપવાનું શરૂ થઈ ગયેલ છે. ઉપરોક્ત સામાન શ્રી પુષ્પાબેન સ્વમુખલાલ દોશી (મુખ્ય)ના વેવાઈ શ્રી મહેતલાલ મોહનલાલ—સંચાલિત શ્રી દિવાળીબેન મોહનલાલ મોહનલાલ ટ્રસ્ટ દ્વારા આપવામાં આવે છે. મુખ્ય માટે ઘઉંનો ભોટ તથા અન્ય વ્યવસ્થા-ખર્ચ શ્રી કહાનગુરુ-જનકલ્યાણ ટ્રસ્ટ તરફથી આપવામાં આવે છે. જનતા-ઉપયોગી આ ભવ્ય કાર્ય માટે ગામના પ્રમુખ મહાનુભાવ પૂજ્ય ગુરુદેવના પુણ્ય-પ્રભાવની મહિમા કરતા હતા અને મુમુક્ષુસમાજ પ્રત્યે પોતાનો આદરભાવ પ્રદર્શિત કરતા હતા.

પ્રશમમૂર્તિ પૂજ્ય બહેનશ્રી ચંપાબહેનની

દ્વિતીય સાંવત્સરિક સમાધિતિથિ પર સોનગઢમાં પાંચ દિવસીય
ધાર્મિક કાર્યક્રમ

[તા. ૧૫-૫-૯૨ થી ૧૯-૫-૯૨]

અનંત-ઉપકાર-મૂર્તિ, સ્વાનુભૂતિ-માર્ગપ્રકાશક, પ્રાતઃ સ્મરણીય
પરમ પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રી કાનજીસ્વામીના અધ્યાત્મતીર્થ-સુવર્ણપુરીની
શોભા ધર્મરત્ન ભગવતીમાતા પૂજ્ય બહેનશ્રી ચંપાબહેનની પવિત્ર
સમાધિનો બીજો સાંવત્સરિક દિન આગામી વૈશાખ વદ-૩, મંગળ-
વાર, ૧૯-૫-૯૨ના રોજ છે. પ્રશમમૂર્તિ પૂજ્ય બહેનશ્રીના દુઃખદ
વિરહની આ વાર્ષિક સમાધિતિથિ નિમિત્તે તા. ૧૫-૫-૯૨ શુક્રવાર
તા. ૧૯-૫-૯૨ મંગળવાર સુધી પાંચ દિવસનો ધાર્મિક કાર્યક્રમ—
પરમપરમેષ્ટીમંડલવિધાનપૂજા, પરમ પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રીના જ્ઞાનવૈરાગ્ય-
પોષક આધ્યાત્મિક ટેપ-પ્રવચનો તથા પૂજ્ય બહેનશ્રીની વિડિયો-
ધર્મચર્યા દ્વારા જ્ઞાન-વૈરાગ્ય-ભક્તિની ઉપાસના, દેવ-ગુરુ-ભક્તિ, ધાર્મિક
શિક્ષણવર્ગ ઇત્યાદિ ધાર્મિક કાર્યક્રમ—રાખવામાં આવશે.

અધ્યાત્મજ્ઞાન-વૈરાગ્ય તેમજ દેવ-ગુરુ-ભક્તિના પોષક આ
ધાર્મિક કાર્યક્રમનો લાભ લેવા, પરમ પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રી તથા પૂજ્ય
બહેનશ્રી પ્રત્યે શ્રદ્ધાભક્તિવાંત સમસ્ત મુમુક્ષુસમાજને શ્રી દિ. જૈન
સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ તરફથી સાધનાતીર્થ શ્રી સુવર્ણપુરીમાં
પધારવા હાદિક આમંત્રણ છે.

સૂચના :—આવાસ તેમ જ ભોજનવ્યવસ્થા નિઃશુલ્ક રાખવામાં
આવી છે.

અમેરિકાવાસી અધ્યાત્મતત્ત્વ-જિજ્ઞાસુઓ માટે પરમ પૂજ્ય સદ્ગુરુદેવ
શ્રી કાનજીસ્વામી દ્વારા સમુપદિષ્ટ સ્વાનુભવપ્રધાન
અધ્યાત્મ-તત્ત્વજ્ઞાન સમજવાનો

卐 સ્વર્ણિમ અવસર 卐

[અમેરિકા-વાસી અધ્યાત્મ-તત્ત્વરસિક જિજ્ઞાસુ સમજાનોના અનુરોધને ધ્યાનમાં
લઈને શ્રી દિ. જીન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ દ્વારા, અધ્યાત્મયુગસ્રષ્ટા અનાંત-
ઉપકારમૂર્તિ, સ્વાનુભવ-વિભૂષિત પરમ પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રી કાનજીસ્વામી દ્વારા સમ્યગ્બોધિત
શુદ્ધાત્મતત્ત્વપ્રધાન અધ્યાત્મ-તત્ત્વજ્ઞાનના પ્રચાર માટે રાજકોટનિવાસી અધ્યાત્મ-
તત્ત્વાભ્યાસી વિદ્વાન ડૉ. શ્રી પ્રવીણભાઈ દોશી, F. R. C. S (લંડન)ને અમેરિકા
મોકલવાનું આયોજન કરવામાં આવ્યું છે. મુમુક્ષુઓને અનુરોધ કરવામાં આવે છે કે
તેઓ અમેરિકા-સ્થિત પોતાના સગા-સંબંધીઓને આ આયોજનની જાણ કરે, જેથી
તેઓ આ સ્વર્ણિમ અવસરનો લાભ લઈ શકે.]

ડૉ. પ્રવીણભાઈ દોશીના અમેરિકા-પ્રવાસનો કાર્યક્રમ

તારીખ	સ્થળ	દિવસ
૧૦-૭-૯૨ થી ૨૨-૭-૯૨	વોશિંગ્ટન D. C.	૧૩
૨૩-૭-૯૨ થી ૨૫-૭-૯૨	એટલાંટા	૩
૨૬-૭-૯૨ થી ૨૮-૭-૯૨	લ્યુઝિયાના	૩
૨૯-૭-૯૨ થી ૪-૮-૯૨	શિકાગો	૭
૫-૮-૯૨ થી ૧૧-૮-૯૨	ડેટ્રોઈટ	૭
૧૨-૮-૯૨ થી ૧૫-૮-૯૨	કોલમ્બસ (ઓહાઈઓ)	૪
૧૬-૮-૯૨ થી ૧૮-૮-૯૨	પીટ્સબર્ગ	૩
૧૯-૮-૯૨ થી ૨૪-૮-૯૨	ન્યૂયોર્ક	૬
તદુપરાંત		કુલ ૪૬ દિવસ

તા. ૩૧-૮-૯૨ થી તા. ૧૫-૯-૯૨ સુધી દશલક્ષણ પર્યુપણપર્વ નિમિત્તે લંડન U. K.

ડૉ. શ્રી પ્રવીણભાઈ દોશીના અમેરિકા-પ્રવાસ કાર્યક્રમની વિશેષ જાણકારી માટે
સંપર્ક સૂત્ર:—આ આયોજનના Co-ORDINATOR—

MR. KASMUKH M. SHAH; 1409 RISING WIND COUPT;
SILVER SPRING MARYLAND; 20905, U. S. A. (PHONE : 301-
304-1746) શ્રી હસમુખભાઈ એમ. શાહ વોશિંગ્ટન D. C.ની જીન સોસાયટીના
એક્ઝીક્યુટિવ-કમિટીના મેમ્બર છે.

આ તો આત્મહિત કરી લેવાની મોસમ પાકી છે

‘લોક મૂકે પોકે,’ તારે દુનિયાનું શું કામ છે? દુનિયા દુનિયાનું જાણે, તું તારા આત્માનું હિત થાય તેમ કરી લે ને! આ તો આત્મહિત કરી લેવાની મોસમ પાકી છે. આવા ટાંણા ચૂકયે ફરી હાથ નહીં આવે. ભાઈ! બહારનું બધું તો એક-બે ચાર નહીં પણ અનંત-અનંતવાર કરી ચૂક્યો છે, તેમાં શું નવું છે?—ને કોઈ શું માનશે કે શું કહેશે એનું તારે શું કામ છે? ખીજને રાજી રાખવામાં કે રાજી કરવામાં તારો આત્મા દાઝી રહ્યો છે. પણ એની તેં કદી દરકાર ક્યાં કરી છે?—હવે તો જાગ! ભેદજ્ઞાનનો માર્ગ આચાર્યદેવે તારી સામે ખૂલ્લો કર્યો છે. અરે! તેં ભોગવેલાં દુઃખોનું પુરું વર્ણન ભગવાનની વાણીથી પણ થઈ શકતું નથી એટલા તો તેં દુઃખ ભોગવ્યા છે, હવે એકવાર તો તારા આત્માની સામે જા!

—પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રી

સંપાદક : નાગરદાસ બેચરદાસ મોદી
તંત્રી : હીરાલાલ ભીખાલાલ શાહ
પ્રકાશક : શ્રી દિ. જૈન સ્વા. મંદિર ટ્રસ્ટ
સોનગઢ-૩૬૪૨૫૦

If undelivered please return to :-
Shri Dig. Jain Swadhyay Mandir Trust
SONGADH-364 250 (INDIA)

Licence No. 21 'Licensed to
post without prepayment'

મુદ્રક : જ્ઞાનચંદ જૈન
કહાન મુદ્રણાલય, સોનગઢ
આજીવન સભ્ય ફી : ૧૦૧/-
વાર્ષિક લવાજમ : રૂ. ૬/-

શ્રી ધીરજીવલાલ
ભાસ્કરની, બી. એડ. કોલેજ,
વલયા-સોનગઢ
સોનગઢ-૩૬૪૨૫૦ (સો.)
શ્રી ધીરજીવ